ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-6* Issue-2* May- 2021
Anthology : The Research

गृह प्रबन्ध में बचत की आवश्यकता और महत्व

The Need and Importance of Saving In Home Management

Paper Submission: 03/05/2021, Date of Acceptance: 14/05/2021, Date of Publication: 25/05/2021

पूजा पल्लवी
असिस्टेंट प्रोफेसर,
गृह विज्ञान विभाग,
गया प्रसाद स्मारक राजकीय
महिला स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, अम्बारी,
आजमगढ़, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

व्यक्ति का जीवन उतार–चढ़ाव भरा अनिश्चित होता है। परिवार की वर्तमान व्यवस्था के साथ–साथ व्यक्ति को उसके भविष्य की चिंता होती है, जिसके लिए वह आय का कुछ हिस्सा बचत के रूप में सुरक्षित रखता है। यह बचत परिवार के भविष्य को सुरक्षा प्रदान करती है। आकस्मिकताओं, भावी जरूरतों के लिए बचत ही परिवार का सहारा होती है। गृह प्रबन्ध में बचत की आवश्यकता और उसका महत्व बहुत अधिक होने के कारण प्रत्येक परिवार कुछ न कुछ बचत अवश्य करता है। नियमित बचत की योजना परिवार को आर्थिक कठिनाइयों से उबारने में मददगार होती है। विपरीत परिस्थितियों जैसे– नौकरी छूटने पर आय का बन्द हो जाना, कमाने वाले सदस्य की मृत्यु हो जाना, बीमारी, व्यापार में घाटा आदि की स्थिति में परिवार के सामने उत्पन्न संकट में बचत सबसे विश्वसनीय सहायक सिद्ध होती है। किसी परिवार के बचत को निर्धारित करने वाले मुख्यतः तीन तत्व होते हें बचत की इच्छा, बचत की क्षमता और बचत की सुविधा। इन्हीं निर्धारक तत्वों से तय होता है कि परिवार बचत करेगा अथवा नहीं। एक समझदार व्यक्ति आय अर्जित करने के शुरूआती दिनों में ही बचत की योजना बनाता है ताकि परिवार का भविष्य अधिक से अधिक सुरक्षित बना सके। बचत करना एक अच्छी आदत है क्योंकि इससे संसाधनों की बर्बादी नहीं होती, ऐसा देशहित में भी होता है। बचत न करने वाले परिवारों को आर्थिक समस्याओं से जूझना पड़ सकता है और उनके ऋणग्रस्त होने की संभावना होती है। बचत के कई साधन होते हैं, जिन्हें आवश्यकतानुसार चुना जा सकता है। बचत के साधन का चुनाव इस आधार पर किया जाता है कि बचत की गई धनराशि पर ठीक–ठाक ब्याज मिलता रहे और जरूरत पड़ने पर धन की आसान निकासी भी हो सके।

A person's life is full of ups and downs and uncertainties. Along with the present arrangement of the family, the person is concerned about his future, for which he keeps some part of the income in the form of savings. This savings provides security for the future of the family. Saving for contingencies, future needs is the support of the family. Due to the need and importance of saving in home management, every family must save something or the other. Regular savings plan helps the family to overcome financial difficulties. Saving proves to be the most reliable helper in the crisis faced by the family in the event of adverse circumstances like loss of job, loss of income, death of earning member, illness, loss in business etc. There are three main factors that determine the savings of a family, the desire to save, the capacity to save and the convenience of saving. These determinants decide whether the family will save or not. A sensible person makes a savings plan in the very early days of earning income so that the future of the family can be secured as much as possible. Saving is a good habit because it does not waste resources, it is also in the interest of the country. Non-saving families may face financial problems and are likely to become indebted. There are several means of savings, which can be selected as per the requirement. The choice of the means of saving is done on the basis that the money saved keeps getting the right interest and also easy withdrawal of money can be done when needed.

मुख्य शब्द : गृह प्रबन्ध, बचत, आय, उपभोग व्यय, योजना, सुरक्षा, परिवार।
Home Management, Savings, Income, Consumption Expenditure, Planning, Security, Family.

प्रस्तावना

मनुष्य का जीवन उतार–चढ़ाव से परिपूर्ण होता है। भविष्य बिल्कुल अनिश्चित होता है जिसमें अप्रत्याशित विपरीत परिस्थितियाँ आ सकती हैं, ऐसे में

पूरे परिवार को आर्थिक संकट का सामना करना पड़ सकता है। परिवार के समक्ष उत्पन्न विपरीत परिस्थितियों में जिस एक चीज की सबसे अधिक आवश्यकता पड़ती है, वह है– धन। पारिवारिक आय विपरीत परिस्थितियों और आकस्मिक आर्थिक संकट के लिए अपर्याप्त होती है। इसलिए पारिवारिक आय से बचाया गया धन अर्थात बचत से ही परिवार का भविष्य सुरक्षित रहता है। वे व्यक्ति जो बचत को महत्व नहीं देते हैं, वे प्रायः धन के अभाव में जीते हैं और उनका परिवार तंगहाली से जूझता रहता है, क्योंकि गृह प्रबन्ध में धन की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण होती है और पारिवारिक बचत इस कार्य को सुगम बना देती है। वे परिवार आर्थिक रूप से अधिक सुरक्षित होते हैं। जहाँ नियमित पारिवारिक बचत की जाती है, परिवार के प्रत्येक सदस्य बचत के महत्व को समझते हैं और मितव्ययिता को अपनाते हैं। पारिवारिक बचत को महत्व देने वाले परिवार अधिक खुशहाल होते हैं। एक कुशल गृहिणी परिवार को वर्तमान में जितना व्यवस्थित रखती है, उतना ही भविष्य में भी सुरक्षित रखना चाहती है, इसके लिए संकल्प के साथ नियमित बचत की आवश्यकता को भली भाँति समझती है।

अध्ययन के उद्देश्य

अध्ययन हेतु निम्न उद्देश्य निर्धारित किये गये हैं–

1. गृह प्रबन्ध में धन की भूमिका का आंकलन करना।
2. बचत की आवश्यकता को रेखांकित करना।
3. बचत के महत्व पर प्रकाश डालना।
4. बचत के निर्धारक तत्वों की समीक्षा करना।
5. परिवार में बचत करने की आदत को प्रोत्साहन देना।

सामान्य अर्थ में कुल आय में से खर्च को घटा देने से जो शेष बचता है, उसे बचत कहते हैं। दूसरे शब्दों में घर की आवश्यकताओं की पूर्ति के बाद जो धन शेष बचता है, वह ही बचत कहलाता है। बचत की गई धनराशि भविष्य की जरूरतों को पूरा करने में सहायक होती है। प्रसिद्ध अर्थशास्त्री जे0एम0 कीन्स के अनुसार,''वर्तमान आय का वर्तमान उपभोग व्यय पर आधिक्य को बचत कहा जाता है।'' (Excess of present income over present consumption expenditure)[1]

वर्मा एवं देशपाण्डे के अनुसार,''बचत मनुष्य की आय का वह भाग है जो वर्तमान आवश्यकताओं की पूर्ति में उपयोग नहीं किया जाता वरन् भविष्य के उपभोग के लिए समझ–बूझ कर अलग उत्पादक रूप में रखा जाता है और सम्पत्ति को पूँजी का स्वरूप दिया जाता है।'' [2]

बचत (Saving) और संचय (Hoarding) में अंतर होता है। बचत सदैव उत्पादक होती है तथा यह मनुष्य की आय का वह भाग है जो कि भविष्य में किये जाने वाले उपयोग के लिए उत्पादक के रूप में रखी जाती है। संचय (Hoarding) या संग्रह आय का वह भाग है जो कि भविष्य की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अनुत्पादक रूप में रखा जाता है। जैसे कोई व्यक्ति 100 रू0 की बचत बैंक में करता है तो उसे ब्याज प्राप्त होगा तो वह बचत उत्पादक होगी। यदि इन्हीं रूपयों को आलमारी या सन्दूक में रख देता है तो कोई ब्याज प्राप्त नहीं होगा। अतः ऐसी बचत अनुत्पादक कहलायेगी और इसे बचत न कहकर संचय या संग्रह कहा जायेगा। बचत से देश को लाभ होता है, क्योंकि बैंक इस पैसे को उद्योग–धन्धों में विनियोजित करता है, लेकिन संचय से देश के विकास में कोई फर्क नहीं पड़ता।[3]

प्रत्येक परिवार की अपनी आवश्यकताएं होती हैं, अपने मूल्य व लक्ष्य होते हैं, जिनके अनुसार ही प्रत्येक परिवार अलग–अलग कारणों से बचत के लिए प्रेरित होता है, किन्तु कुछ ऐसे सामान्य कारण होते हैं, जिससे औसतन सभी परिवार बचत के लिए प्रेरित होते हैं। ये मुख्य रूप से ऐसे कारण हैं जो परिवार के अंदर बचत की आवश्यकता को जन्म देते हैं।

जार्ज केटोना द्वारा किये गए अध्ययन में एक परिवार द्वारा बचत करने के निम्नलिखित कारण बताये गए हैं[4]–

1. अनिश्चित भविष्य की अनिश्चितताओं हेतु जब आय से आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं होती।
2. बच्चों और परिवार की आवश्यकताओं हेतु, जैसे–शिक्षा और अन्य बड़ी आवश्यकताओं के लिए।
3. सेवा–निवृत्ति, जब आय प्राप्त न होने की दशा में धन की आवश्यकता होती है।
4. अन्य उद्देश्य जैसे – मकान, बड़े उपकरण और फर्नीचर, यात्रा आदि हेतु।

गृह प्रबन्ध के लिए जितनी आवश्यकता आय की होती है उतनी ही आवश्यकता बचत की भी होती है। आय से वर्तमान जरूरते पूरी होती तो बचत से भविष्य की आवश्यकताओं की पूर्ति होती है। गृह प्रबन्ध में बचत की आवश्यकता को निम्न बिन्दुओं के अंतर्गत समझा जा सकता है–

आपातकाल के लिए

प्रत्येक परिवार के सामने कभी न कभी कोई आपातस्थिति आ सकती है। आकस्मिकता आने की स्थिति में परिवार बुरी तरह से प्रभावित होता है। ऐसी स्थिति में बचत ही परिवार को संकट से उबार सकती है और परिवार कर्ज में डूबने से बच जाता है। इसलिए कुछ धनराशि बचत के रूप में रखनी चाहिए।

भविष्य में आर्थिक विपन्नता का डर

कई बार परिवार को कुछ आर्थिक विपन्नताओं का भी सामना करना पड़ सकता है, जब उसकी आय एकाएक कम या बन्द हो जाती है। इस प्रकार की स्थिति तब हो सकती है, जब व्यापार में एकाएक घाटा आ जाये, आग लग जाये, चोरी हो जाये, नौकरी छूट जाए आदि। ऐसी स्थिति में परिवार को पुनः स्थापित होने के लिए बचत का ही सहारा होता है, अतः परिवार को कुछ धन ऐसे विनियोग में लगाना चाहिए जिसकी तरलता सुगम हो और आवश्यकता पड़ने पर तुरन्त निकाला जा सके।[5]

दीर्घकालीन आवश्यकताओं की पूर्ति

परिवार की दीर्घकालीन आवश्यकताओं की पूर्ति बचत के द्वारा आसानी से हो सकती है। बच्चों की उच्च शिक्षा, शादी, मकान बनाने आदि कामों के लिए बड़ी मात्रा में धन की जरूरत पड़ती है। यदि परिवार नियमित रूप से बचत पर ध्यान देता है तो उसके पास ऐसी बड़ी जरूरतों को पूरा करने में दिक्कत का सामना नहीं करना पड़ता है। बचत से परिवार का भविष्य सुरक्षित होता है।

आय अर्जित करने वाले सदस्य की मृत्यु

कभी–कभी परिवार के कमाऊ सदस्य की अचानक असमय मृत्यु हो जाती है। ऐसी स्थिति में परिवार के सामने गंभीर आर्थिक संकट जा जाता है। इस विकट परिस्थिति में बचत ही परिवार का सबसे बड़ा सहारा होती है। इसलिए परिवार के कमाने वाले सदस्य का बीमा अवश्य कराना चाहिए और नियमित रूप से बचत करनी चाहिए।

सेवानिवृत्ति

सेवा निवृत्ति के बाद किसी व्यक्ति की आय कम हो जाती है या बिल्कुल खत्म हो जाती है, ऐसे में परिवार को आर्थिक कष्टों का सामना करना पड़ सकता है और धन की आवश्यकता पड़ती है। उम्र अधिक हो जाने पर स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानियाँ भी घेरने लगती हैं, बीमारियों के इलाज के लिए भी धन की जरूरत पड़ती है।ऐसी हालत में सेवानिवृत्ति को ध्यान में रखकर की गई नियमित बचत ही व्यक्ति और उसके परिवार का सहारा होती है। इसलिए सेवानिवृत्ति हेतु बचत की योजना अवश्य बनायी जानी चाहिए।

नौकरी छूटने या आय बन्द हो जाने पर

चत आकस्मिक संकट में भी हमारी सहायता करती है। आकस्मिक रूप से भविष्य में नौकरी छूटने, व्यापार बन्द होने, व्यापार में घाटा होने के कारण आय बन्द हो सकती है। ऐसे संकट के समय बचत की धनराशि बड़े महत्व की होती है। ऐसे उदाहरण अक्सर देखने को मिलते है कि भविष्य के लिए बचत न करने वाले व्यक्तियों को उस संकट के समय भूखों मरना पड़ता है अथवा ऋण लेकर गुजारा करना पड़ता है। यदि व्यक्ति चाहता है कि अस्थायी रूप से आय के साधन बन्द हो जाने पर भी सम्मानपूर्वक अपना तथा अपने परिवार का पालन–पोषण करता रहे तो उसे नियमित रूप से आय का कुछ भाग अवश्य ही बचाकर रखना चाहिए।[6]

जीवन स्तर में सुधार हेतु

बचत से परिवार का रहन–सहन का स्तर ऊँचा उठता है। बचत की धनराशि से उपयोगी सामान खरीदकर जीवन स्तर में वृद्धि की जा सकती है। अपव्यय से परिवार की माली हालत खराब हो जाती है और जीवन स्तर गिर जाता है इसलिए बचत कर इसे सुधारा जा सकता है। मंहगाई दिनों–दिन बढती जाती है इसका सीधा असर परिवार के रहन–सहन पर पड़ता है केवल नियमित बचत ही इसके स्तर को बरकरार रख सकती है।

मितव्ययिता की आदत

बचत करने से परिवार के सदस्यों में मितव्ययिता की आदत पड़ जाती है। जो व्यक्ति आधिक धन खर्च करता है वह सदैव ऋणग्रस्त रहता है और अपने को सुरक्षित अनुभव नहीं करता है। व्यय करने की कोई सीमा नहीं है। मितव्ययी न होने से व्यक्ति सदैव आय से अधिक व्यय करता है।[7]

कमाने में अयोग्य होने पर

कई बार कमाने वाला व्यक्ति अपंगता, गंभीर बीमारी, मानसिक स्थिति खराब हो जाने पर आय अर्जित करने में अयोग्य हो जाता है। ऐसी विकट परिस्थितियों में बचत ही परिवार को कठिनाइयों से निकालने में सहायक होती है और आर्थिक सुरक्षा प्रदान करती है।

भावी योजनाओं के लिए

व्यक्ति अपने भविष्य के लिए कुछ न कुछ योजना बनाकर रखता है, जैसे– मकान बनाना या उसकी मरम्मत कराना, जमीन खरीदना, नया व्यवसाय या व्यापार शुरू करना देश या विदेश में घूमने जाना आदि। भविष्य की ऐसी योजनाएं तभी साकार हो सकती हैं जब इनके लिए भविष्य में पर्याप्त धनराशि होगी, यह धन नियमित बचत से ही पूरा हो सकता है। अतः बचत के लिए योजना बनाकर अलग–अलग मद में निवेश किया जाना चाहिए, ताकि वक्त आने पर जरूरी तरलता उपलब्ध हो सके।

सामाजिक–आर्थिक स्तर बढ़ाना

आम तौर पर पड़ोसी और अन्य व्यक्ति, जिनके साथ परिवार का सम्पर्क होता है, वे परिवार के पास सम्पत्ति का आकलन करते हैं। एक परिवार जो बचत करता है, वह शीघ्रता से बिलों आदि का भुगतान कर सकता है। ऐसे कारक समाज में परिवार की अच्छी छवि बनाने में योगदान करते हैं।[8]

ऋण हासिल करने में मददगार

बचत करने वाले परिवार बैंकों से आसानी से ऋण पाने का दावा कर सकते हैं। आजकल राष्ट्रीयकृत बैंक गरीब लोगों को आसान शर्तों पर आटोरिक्शा, सिलाई मशीन आदि खरीदने के लिए लोन देते हैं। इसलिए बचत परिवार के वित्तीय प्रबन्धन में महत्व रखती है।[9]

बचत के निर्धारक तत्व

कोई परिवार बचत करेगा अथवा नहीं इसको निर्धारित करने वाले तीन निम्नलिखित तत्व हैं–

बचत करने की क्षमता (Ability to save)

किसी व्यक्ति की बचत करने की क्षमता उसकी कुल आमदनी तथा उसके द्वारा किये गए उपभोग व्यय पर निर्भर करती है। व्यक्ति की आय कम से कम इतनी अवश्य होनी चाहिए कि उसका कुछ भाग उपभोग व्यय के बाद शेष बचे। धनी व्यक्ति की आय कुल उपभोग व्यय से अधिक होने के कारण बचत हो जाती है जबकि गरीब आदमी की आमदनी उसकी रोजमर्रा की जरूरतों को पूरा करने में ही खर्च हो जाती जिससे उसकी बचत नहीं हो पाती। अतः बचत करने के लिए बचत की क्षमता का होना जरूरी होता है।

बचत की इच्छा (Desire to save)

व्यक्ति की इच्छा ही उसे कुछ करने के लिए प्रेरित करती है। कोई व्यक्ति तब तक बचत की शुरूआत नहीं करता जब तक कि उसके अंदर इसकी इच्छा जागृत नहीं होती। बचत की योग्यता होने के बावजूद कई व्यक्ति अनावश्यक खर्चों में अपनी पूरी आय खत्म कर देते हैं क्योंकि उनके अंदर बचत की इच्छा का अभाव होता है। कुछ लोग बचत को बाद के लिए टाल देते हैं। वे मौजूदा खर्च को अधिक तरजीह देते हैं। इसके कई नुकसान हैं। दिल्ली की एक सायकोलॉजिस्ट प्रेरणा कोहली का कहना है, ''युवा अक्सर यह सोचते हैं कि बचत के लिए पूरा जीवन पड़ा है। वे बचत का महत्व समझते है, लेकिन

मौजूदा जरूरत और खर्च की इच्छा उन पर भारी पड़ती है।''[10]

बचत की सुविधा (Opportunities to save)

कोई व्यक्ति तभी बचत करता है जब उसे बचत की सुविधा प्राप्त हों। बचत की क्षमता और इच्छा के बावजूद कोई भी व्यक्ति बचत के लिए तब तक प्रोत्साहित नहीं होता जब तक कि बचत की अनुकूल सुविधा न उपलब्ध हो। बचत की सुविधा के अंतर्गत, बचत का उचित माहौल, देश की सुदृढ़ अर्थव्यवस्था, निवेश के विविध साधन आदि तथ्य आते हैं। बचत की सुविधा को बचत का बाह्य निर्धारक तत्व कह सकते हैं, इसके अंतर्गत बाह्य परिस्थितियाँ सम्मिलित हैं।

जिन देशों की प्राकृतिक स्थिति अच्छी नहीं होती है, वहाँ पर बचत अपेक्षाकृत कम होती है, क्योंकि असुरक्षित जीवन उपभोग को प्रोत्साहित करता है तथा सुरक्षित जीवन बचत को प्रोत्साहित करता है। जिस देश में आये दिन बाढ़, महामारी, भूकम्प एवं अकाल आदि आते रहते हैं तो लोगों का भविष्य अनिश्चित, असुरक्षित एवं अन्धकारमय होता है, अतः ये लोग बचत करने के बजाय उपभोग करना ज्यादा पसंद करते हैं।[11]

बचत के प्रकार

बचत को दो श्रेणियों में बाँटा जा सकता है– अनिवार्य बचत और स्वैच्छिक बचत। सरकारी नियम का पालन करते हुए व्यक्ति और संस्थान द्वारा की गई बचत अनिवार्य बचत होती है। इसके अंतर्गत भविष्य निधि योजना (EPF & GPF) और पेंशन निधि योजना (NPS) में की गई बचत आती है। केवल सरकारी विभाग ही नहीं निजी कम्पनियाँ भी इसके लिए विधितः बाध्यकारी प्रावधान करती हैं।

स्वैच्छिक बचत व्यक्तियों के द्वारा पोस्ट ऑफिस या बैंक में जमा कर, बीमा पॉलिसी खरीदकर या लोक भविष्य निधि में जमा के माध्यम से की जाती है।

बचत के साधन

प्रत्येक व्यक्ति अपनी बचत को ऐसे उत्पादक कार्यों में लगाना चाहता है जिससे उसे कुछ लाभ प्राप्त हो और जरूरत आने पर आसानी से धनराशि प्राप्त हो सके। नियमित रूप से की गई बचत जब एक बड़ी राशि के रूप में एकत्र हो जाती है तो उसे निवेश किया जाता है और बचत को लाभकारी बनाया जाता है। बचत के कई साधन है जहाँ उसका निवेश या विनियोग किया जा सकता है। मुख्य रूप से बचत के साधन हैं– बैंक, डाकघर बचत बैंक, जीवन बीमा, राष्ट्रीय बचत पत्र, शेयर, लोक भविष्य निधि (PPF), ऋण पत्र आदि।

बचत के साधनों का चयन अपनी सुविधानुसार किया जाना चाहिए ताकि उचित ब्याज (Interest) की प्राप्ति के साथ ही आवश्यकता पड़ने पर धन की तुरंत निकासी संभव हो सके। सबसे अच्छा तरीका यह माना जाता है कि बचत की सम्पूर्ण धनराशि का निवेश एक जगह करने की बजाय अलग–अलग साधनों व मद में करना चाहिए। अर्थात बचत के साधनों को चुनने में विविधता को प्राथमिकता देना चाहिए, ताकि आवश्यकतानुसार धनराशि निकाली जाय।

बचत की मात्रा की बात की जाय तो उपयुक्त यह होगा कि व्यक्ति पहले अपनी भावी जरूरतों का अनुमान कर ले, साथ ही आकस्मिकता को भी ध्यान में रखा जाय और उसके अनुसार बचत की योजना बनायी जाय। निहायत जरूरी खर्च जैसे– पोषणयुक्त भोजन, बच्चों की शिक्षा, इलाज आदि में कमी के बजाय कम जरूरी खर्चों जैसे–सैर–सपाटा, मनोरंजन, जन्मदिन और सालगिरह आदि की पार्टी, साज–सज्जा, फर्नीचर, जरूरत से अधिक कपड़ों और आभूषणों इत्यादि में कटौती विवेकपूर्ण और तर्कसंगत बचत कही जाएगी। बचत की मात्रा सभी परिवारों के लिए एक सी नहीं हो सकती। फिर भी अगर सभी के लिए न्यूनतम बचत का पैमाना बनाया जाय तो विशेषज्ञ इसके लिए कुल आय का 10 प्रतिशत मानते हैं।

निष्कर्ष

बचत एक परिवार के लिए उतना ही महत्व रखती है जितना कि आय। बचत अनिश्चितता भरे जीवन चक्र में किसी भी परिवार के लिए सुरक्षा की गारंटी है। नियमित बचत की योजना प्रत्येक परिवार के भविष्य को सुरक्षित बनाने के लिए बेहद जरूरी है। बचत को महत्व न देने के कारण करोड़ों की आमदनी वाले परिवार विपरीत परिस्थितियों में कर्ज के बोझ से तबाह हो जाते हैं। इसलिए बचत की आवश्यकता और महत्व को समझते हुए एक बुद्धिमान व्यक्ति जल्दी से जल्दी बचत की योजना बनाकर इसकी शुरूआत कर देता है। क्योंकि बचत से व्यक्ति और परिवार का मनोबल मजबूत होता है। इसीलिए सफल गृह प्रबन्ध में बचत की आवश्यकता और महत्व को एकमत से स्वीकारा जाता है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *सक्सेना, सविता एवं अंजू सिंह, गृहप्रबन्ध, भवदीय प्रकाशन, अयोध्या, 2012, पृ0 174*
2. *वर्मा, सरस्वती एवं आशा देशपाण्डे, पारिवारिक वित्त, मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रंथ आकादमी, भोपाल, 1972, पृ0 369*
3. *खनूजा, रीना, गृह व्यवस्था एवं गृह सज्जा, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा, 2012, पृ0 , 103*
4. *Katona,George, The mass consumption society, New York, 1964, pp.176-177*
5. *पाटनी, मंजु एवं ललिता शर्मा, गृह प्रबन्ध, स्टार पब्लिकेशन्स, आगरा, षष्ठम संस्करण, पृ0 95*
6. *सक्सेना, सविता एवं अंजू सिंह, पूर्वोक्त, पृ0 151*
7. *सक्सेना, सविता एवं अंजू सिंह, पूर्वोक्त, पृ0 151*
8. *Varghese, MA & other, Home Management, New Age International Publishers, New Delhi, 2020, pp. 92*
9. *Varghese, MA & other, Ibid, pp. 92*
10. *https://m.economictimes.com/hindi/wealth/bachat /9-tricks-to-help-you-save-more /articleshow/64158295. cms*
11. *खनूजा, रीना, पूर्वोक्त, पृ0 106*